प्राचार्य श्यामसुंदर साहू शिक्षक साहित्य साधक सम्मान से हुए सम्मानित

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अभियान से प्रेरित होकर शिक्षक साहित्य परिषद छत्तीसगढ़ के तत्वावधान में सागर कुमार शर्मा द्वारा साझा काव्य संग्रह ÷एक पेड़ माँ के नाम÷ के विमोचन एवं सम्मान समारोह का आयोजन 19 जनवरी 2026, सोमवार को प्रेमरतन मैरिज पैलेस राजिम किया गया। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल रमेन डेका द्वारा राजभवन में शिक्षक साहित्य परिषद छत्तीसगढ़ द्वारा रचित साझा काव्य संग्रह ÷एक पेड़ माँ के नाम÷ का विधिवत विमोचन किया गया। इस काव्य संग्रह में प्राचार्य श्याम सुंदर साहू की कविता को भी शामिल किया गया। इस मौके पर उनको उपस्थित अतिथियों के हाथो से शाल, श्रीफल मोमेंटो, प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इससे पहले प्राचार्य साहित्य के साथ साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल, अध्यक्षता चंदूलाल साहू अध्यक्ष बीज निगम छत्तीसगढ़ ने किया.विशिष्ट अतिथि के रूप में राजिम विधायक रोहित साहू एवं पूर्व विधायक संतोष उपाध्याय, प्रदेश अध्यक्ष महिला मोर्चा विभा अवस्थी, कुलपति डॉ विनय पाठक,वरिष्ठ साहित्यकार मीर अली मीर एवं महेश यादव अध्यक्ष नगर पालिका राजिम उपस्थित थे। प्राचार्य के इस उपलब्धि पर बीईओ मगरलोड मनीष ध्रुव, बी आर सी टोमेश्वर ठाकुर, संकुल प्राचार्य एस के साहू, अशोक पटेल, संकुल समन्वयक बी के सोनी साथ ही विद्यालय के व्याख्याता एच के बंसोर,के के साहू, टी के साहू, डी के साहू, के एल साहू, पवन निषाद एवं उनके सभी इष्ट मित्रों व शुभचिंतकों ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएं एवं बधाई दी है।।

समय का हो उत्कृष्ट सदुपयोग

समय खोया हुआ पुनः पाया जाए इसका कोई उपाय नहीं हैं । इसीलिए कहा गया है कि समय सर्वोच्च शक्ति हैं । हमारे जीवन में समय का बहुत महत्व होता हैं । समय एक प्रकार का धन हैं । इस धन का हम मानव क्या उपयोग कर सकते हैं । यह हमारे लिए एक ध्यातव्य बात हैं । जो व्यक्ति समय का आदर करता है वास्तव में वह सर्वोच्च शक्ति की आदर भक्ति करता है। समय की बर्बादी आत्मपतन की आबादी है । वह जो समय को व्यर्थ खोता है वास्तव में अपने जीवन के साथ अनर्थ ही करता है । समय का सदुपयोग भी किया जा सकता हैं । दुरुपयोग भी किया जा सकता हैं । अनुपयोग भी किया जा सकता हैं । समय का हर पल एक साधना है । उसे किसी सार्थक काम में लगाना ही इसकी सही आराधना है । अतः हम इसे खोएँ नहीं किसी सार्थक प्रयोजन में सही-सही लगाएँ । अच्छे कार्यों में समय का सही से नियोजन किया जाए तो समय का सही से सदुपयोग भी हो जाता हैं । हिंसा, झूठ, धोखाधड़ी आदि बुरे कार्यों में समय का नियोजन किया जाए तो समय का दुरुपयोग हो जाता हैं । वह आदमी आलस्यवश आदि प्रयोजन से कोई कार्य ही नहीं करें तो वह समय का अनुपयोग हो जाता हैं । हमको चाहिए की हम समय का बढ़िया, धार्मिक - आध्यात्मिक उपयोग करें । हम बुरे कार्यों, बुरे विचारों और बुरी योजनाओं में अपना समय कभी भी नहीं लगाए । वह कुछ भी नहीं करना उत्तम नहीं हैं । समय का अच्छा उपयोग किया जाए तो जीवन में समय का सार्थक सही से उपयोग संभव हैं । हमको समय के लिए किसी प्रकार का धन लगाने की आवश्यकता नहीं होती हैं । हमको प्रतिदिन के 24 घंटे समान रूप से मिलते हैं । इस समय का कौन व्यक्ति कितना विवेकपूर्ण उपयोग करता है । यही सबसे महत्वपूर्ण होता हैं

। धर्मग्रंथों में चौरासी लाख जीवयोनियों बताई गई हैं । उनमें यह मानव जीवन दुर्लभ और महत्वपूर्ण हैं । इस मानव जीवन में साधना करके मोक्ष तक पहुँचा जा सकता हैं । वह किसी अन्य योनि से मोक्ष की प्राप्ति करना संभव नहीं हैं । अतः इस मानव जीवन में हमें समय का सही और उत्कृष्ट उपयोग करना चाहिए । इस सर्वोच्च शक्ति का सदुपयोग तभी होगा जब सद्कर्मो से प्राप्त इस दुर्लभ निधि का सही उपयोग हमारे से होगा । अतः सदा सदा ध्यान रहे कि समय बड़ा बलवान हैं । **- प्रदीप छाजेड़, (बोरावड़)**

कहानिका अखिल भारतीय कवि सम्मेलन सह सम्मान समारोह卐 का भव्य आयोजन

रायपुर (छत्तीसगढ़)। शांतिनगर स्थित विमतारा भवन में ÷कहानिका÷ हिंदी पत्रिका के तत्वाधान में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन सह सम्मान समारोह का भव्य और गरिमामय आयोजन संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम संध्या 3ः30 बजे से रात्रि 8ः30 बजे तक चला, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए साहित्यकारों, कवियों एवं रचनाकारों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि माननीय डॉ. महेंद्र कुमार ठाकुर, श्रीमती शशि दुबे, इंद्रजीत तिवारी 'निर्भीक', श्याम कुंवर भारती, डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी, डॉ. सुनील दत्त मिश्रा,तथा शिखा गोस्वामी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात सरस्वती माता की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित की गई। उद्घाटन सत्र का मंच संचालन डॉ. रश्मि लता मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में सरस्वती वंदना किरण वाजपेई (बिलासपुर) ने तथा गणेश वंदना, देवी गीत - श्याम कुंवर भारती (बोकारो, झारखंड) द्वारा किया गया तथा स्वागत गीत सुभाष शुक्ला (रायपुर) ने प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण डॉ. रश्मि लता मिश्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर डॉ. श्याम कुंवर भारती की काव्य साझा संग्रह ÷÷ऑपरेशन सिंदूर ÷ तथा संजय श्रीराम धोते की विनोबा नामक पुस्तकों का विमोचन भी संपन्न हुआ। इसके पश्चात स्वर्णलता द्विवेदी, संतोष श्रीवास्तव सम, गोवर्धन लाल बघेल, निवेदिता वर्मा मेघा, भारती यादव मेघा, रूपा कुमारी, अंशिता सिन्हा को काशी हिंदी विद्यापीठ बनारस द्वारा ÷विद्या वाचस्पति मानद सम्मान÷ प्रदान किया गया एवं देशभर के अनेक साहित्यकारों को जिनमें प्रमुख रूप से , रश्मि लता मिश्रा, सीमा निगम, डॉ. सीमा अवस्थी, नरेंद्र वैष्णव, नावेद रजा दुर्गवी, मिताली श्रीवास्तव वर्मा, डॉ. संजय श्रीराम घोटे, गायत्री पाण्डेय, जगन्नाथ पांडेय, सोनिया सोनो, शिखा गोस्वामी निहारिका (मुंगेली), सुधीर श्रीवास्तव,श्याम कुंवर भारती, रवि शर्मा 'राधेय' सहित अनेक रचनाकार को ÷कहानिका काव्य महारथी सम्मान÷ से सम्मानित किया गया। अतिथियों के उद्बोधन जिसमें विशिष्ट अतिथियों के रूप में कैलाश चंद्र बरमेचा स्वदेश, श्रीमती शशि दुबे, विजय कुमार गुप्ता, इंद्रजीत तिवारी 'निर्भीक', श्याम कुंवर भारती, डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी, डॉ. सुनील दत्त मिश्रा, तथा मुख्य अतिथि डॉ. महेंद्र कुमार ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त किए। इसके पश्चात आयोजित सम्मान समारोह का मंच संचालन सीमा निगम ने किया। चाय-विश्राम के पश्चात काव्य-पाठ नावेद रजा दुर्गवी के मंच संचालन में सम्पन्न हुआ, जिसमें कुल 20 कवियों ने अपनी सशक्त रचनाओं से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। सभी कवियों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन श्याम कुंवर भारती ने किया तथा सभाध्यक्ष द्वारा समापन की घोषणा के साथ यह साहित्यिक महोत्सव सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

रासबिहारी बोसः भारतीय क्रांति के गुमनाम महानायक

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्रायः दो धाराओं में बाँटकर देखा जाता है–एक अहिंसक, सत्याग्रह और जनआंदोलन की धारा, और दूसरी सशस्त्र क्रांति की वह धारा, जिसने गुप्त संगठनों, षड्यंत्रों और प्रत्यक्ष हिंसक प्रतिरोध के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दी। दुर्भाग्य से इतिहास लेखन में दूसरी धारा के कई नायकों को या तो सीमित स्थान मिला या वे पूरी तरह हाशिये पर चले गए। रासबिहारी बोस ऐसे ही एक गुमनाम किंतु असाधारण क्रांतिकारी थे, जिनका योगदान न केवल भारत में बल्कि भारत से बाहर, अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा तय करने वाला सिद्ध हुआ।

25 मई 1886 को बंगाल के बर्धमान जिले के सुबालदहा गाँव में जन्मे रासबिहारी बोस एक शिक्षित, बौद्धिक और अनुशासित परिवार से आए थे। उनके पिता विनोद बिहारी बोस सरकारी सेवा में थे, जिससे रासबिहारी को प्रारंभ से ही औपनिवेशिक शासन की कार्यप्रणाली को नज़दीक से देखने का अवसर मिला। चंदननगर और कोलकाता में हुई उनकी शिक्षा ने उनके व्यक्तित्व को विशेष रूप से आकार दिया। चंदननगर उस समय फ्रांसीसी शासन के अधीन था और फ्रांसीसी क्रांति के विचार–स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व–उनके मन में गहराई तक उतर गए। यह कोई संयोग नहीं था कि आगे चलकर वे केवल भारत की स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि एशिया के उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्षों के भी एक महत्वपूर्ण सेतु बने। देहरादून के वन अनुसंधान संस्थान में हेड क्लर्क के रूप में उनकी नियुक्ति एक सामान्य सरकारी नौकरी प्रतीत होती है, लेकिन इसी आवरण के पीछे एक अत्यंत सक्रिय क्रांतिकारी मस्तिष्क काम कर रहा था। रासबिहारी बोस उन विरले क्रांतिकारियों में थे जो संगठन, रणनीति और गोपनीयता–तीनों में दक्ष थे। बाघा जतिन जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में रहकर उन्होंने सशस्त्र विद्रोह को केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि सुनियोजित राजनीतिक रणनीति के रूप में विकसित किया।

23 दिसंबर 1912 को दिल्ली के चांदनी चौक में वायसरायर लॉर्ड हार्डिंग पर किया गया बम हमला भारतीय क्रांतिकारी इतिहास की सबसे साहसिक घटनाओं में गिना जाता है। यह केवल एक व्यक्ति पर हमला नहीं था, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य की अजेयता के मिथक को तोड़ने का प्रयास था। हार्डिंग के बच जाने के बावजूद इस घटना ने अंग्रेजी हुकूमत को गहरी बेचैनी में डाल दिया। इसके बाद रासबिहारी बोस का पुलिस को चकमा देकर बच निकलना और सामान्य रूप से अपनी नौकरी पर लौट आना, उनकी असाधारण संगठन क्षमता और धैर्य का प्रमाण है। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रासबिहारी बोस ने गदर पार्टी के साथ मिलकर जो योजना बनाई, वह यदि सफल हो जाती तो भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास संभवतः बिल्कुल अलग होता। ब्रिटिश भारतीय सेना के भीतर एक साथ विद्रोह की योजना, 21 फरवरी 1915 की तय तारीख और व्यापक तैयारी–ये सभी दर्शाते हैं कि यह कोई आवेगपूर्ण प्रयास नहीं था। दुर्भाग्य से एक मुखबिर की गद्दारी ने इस योजना को विफल कर दिया और इसके बाद जो दमन चक्र चला, उसने क्रांतिकारी आंदोलन को गहरी चोट पहुँचाई। जब भारत में रहना उनके लिए असंभव हो गया, तब रासबिहारी बोस का जापान जाना किसी पलायन की कहानी नहीं, बल्कि संघर्ष के विस्तार की शुरुआत थी। रवींद्रनाथ टैगोर के एक रिश्तेदार के नाम से जापान पहुँचना, ब्रिटिश दबावों के बावजूद वहाँ शरण मिलना और फिर जापानी समाज में स्वयं को स्थापित करना–यह सब उनकी दूरदृष्टि और अंतरराष्ट्रीय समझ का परिचायक है। तोशिको सोमा से विवाह और जापानी नागरिकता ग्रहण करना केवल व्यक्तिगत निर्णय नहीं थे, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य की कानूनी पकड़ से बाहर निकलने की एक राजनीतिक रणनीति भी थी। जापान में रहते हुए रासबिहारी बोस ने भारतीय स्वतंत्रता को एशियाई स्वतंत्रता आंदोलन के व्यापक संदर्भ में रखा। उन्होंने जापानी जनता और नेतृत्व को यह समझाने का प्रयास किया कि भारत की गुलामी केवल भारत की समस्या नहीं, बल्कि एशिया की सामूहिक पराजय का प्रतीक है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब जापान के हाथों ब्रिटिश पराजित हुए और हजारों भारतीय सैनिक युद्धबंदी बने, तब रासबिहारी बोस ने इस ऐतिहासिक अवसर को पहचान लिया। इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना और आजाद हिंद फौज के गठन का विचार उन्हीं के मस्तिष्क की उपज था। लेकिन उनका सबसे बड़ा गुण यह था कि वे सत्ता या नेतृत्व से चिपके रहने वाले व्यक्ति नहीं थे। जब उन्हें लगा कि इस आंदोलन को एक युवा, ऊर्जावान और करिश्माई नेतृत्व की आवश्यकता है, तो उन्होंने सुभाष चंद्र बोस को आमंत्रित किया और बिना किसी संकोच के संपूर्ण नेतृत्व उन्हें सौंप दिया। यह घटना भारतीय राजनीतिक संस्कृति में दुर्लभ उदाहरण है, जहाँ व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के बजाय उद्देश्य को प्राथमिकता दी गई। रासबिहारी बोस का योगदान केवल संगठनात्मक या सैन्य नहीं था। वे लेखक, विचारक और सांस्कृतिक दूत भी थे। जापानी भाषा सीखकर उन्होंने पुस्तकों और पत्रिकाओं के माध्यम से भारत की स्थिति को जापानी समाज के सामने रखा। 'न्यू एशिया' पत्रिका का संपादन इस बात का प्रमाण है कि वे विचारों की लड़ाई को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे जितना हथियारों की। 21 जनवरी 1945 को टोक्यो में उनका निधन हुआ। यह विडंबना ही है कि जिनके प्रयासों से आजाद हिंद फौज का सपना साकार हुआ, वे स्वतंत्र भारत को अपनी आँखों से नहीं देख सके। जापान के सम्राट द्वारा दिया गया 'ऑर्डर ऑफ द

राइजिंग सन' सम्मान उनके अंतरराष्ट्रीय योगदान की स्वीकृति था, लेकिन भारत में उन्हें वह स्थान अब भी पूरी तरह नहीं मिला है जिसके वे अधिकारी थे। आज, जब हम स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को नए सिरे से देखने की बात करते हैं, रासबिहारी बोस जैसे क्रांतिकारियों को स्मरण करना केवल अतीत का सम्मान नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए भी एक सबक है। उन्होंने दिखाया कि राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं होता, कि मातृभूमि के लिए संघर्ष सीमाओं में बँधा नहीं होता, और कि सच्चा नेतृत्व वही है जो समय आने पर स्वयं पीछे हटना जानता है। रासबिहारी बोस वास्तव में भारतीय क्रांति के गुमनाम महानायक हैं–ऐसे महानायक, जिनकी गूंज आज भी इतिहास के शोर में सुनाई देने की प्रतीक्षा कर रही है। **- महेन्द्र तिवारी मोबाइल- 9989703240**

पुस्तक मेला

अपने शहर में समय - समय पर आयोजित होने वाले तरह - तरह के मेलों में अक्सर मैं जाता रहता हूं। मेरा वहां रचनाकार , सहभागी या ग्राहक की तरह जाना कभी नहीं हुआ । जिस तरह शहरों के शॉपिंग मॉल में बहुत से लोग केवल घूमने और विंडो शॉपिंग के मकसद से जाते हैं उसी तरह मेरा भी इन मेलों जाना होता है। उसमें कई तरह के अनुभव भी होते हैं। लेकिन हाल ही में हमारे शहर मे आयोजित एक पुस्तक मेला विशेष रुप से साहित्यिक संग्रहों और किताबों के विमोचन और बिक्री के लिए मुझे एक नया अनुभव देकर गया है। इस पुस्तक मेले का प्रचार जोर शोर से सोशल मीडिया पर किया गया था। विभिन्न नामचीन प्रकाशकों ने अपनी पुस्तकों , संग्रहों और लेखकों के प्रचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। वर्तमान युग प्रचार का ही युग है। जो दिखता है वह बिकता है। एक ही छत के नीचे उम्रदराज नामी लेखकों , नए लेखकों और प्रकाशकों का मिलना एक तरह से अद्भुत संगम था। प्रकाशक लोग पुस्तक मेले में आबंटित अपनी - अपनी स्टॉल के नंबर पाठकों की सुविधा के लिए सोशल मीडिया पर पहले ही बता चुके थे। हर स्टॉल पर पाठकों की रुचि और लेखकों के प्रति उनकी मांग के अनुसार संग्रहों और किताबों को प्राथमिकता से रखा गया था। नामचीन लेखकों की रचनाओं के संग्रहों और किताबों को स्टॉल्स की शोभा बढ़ाने और बिक्री के लिए प्राथमिकता से रखा गया था। जिसमें उन्होने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। अलग - अलग विधा में लिखी विभिन्न रचनाएं और संग्रह प्रकाशकों की स्टॉल पर मौजूद थे । लंबे समय से प्रकाशक की दुकान पर धूल की चादर ओढ़े और गुमनाम से किसी कोने में किसी तरह अपने अस्तित्व को समेटे पड़े कई संग्रह भी इस पुस्तक मेले में मौजूद थे । दुकान से पुस्तक मेले की स्टॉल तक उसे पहुंचाने में इनके रचनाकारों को कितनी मशक्कत करनी पड़ी होगी ,उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता । इन संग्रहों को इतने दिनों बाद उजाले में आने के कारण एक बार तो उनके साथ अरसे से दुकान में रह रहे अन्य संग्रह भी उन्हे पहचान नहीं पाए थे। ट्यूबलाइट और एल इ डी की दूधिया रोशनी में इन गुमनाम से संग्रहों के मुख पृष्ठ की खूबसूरती देखते ही बनती थी। चूंकि उनकी किसी भी कॉपी को किसी ने कभी छुआ नहीं था, इसलिए उनके पन्नों का कड़कपन और रंग उस समय तक बरकरार था। हकीकत में तो सभी स्टॉल में सबसे खूबसूरत दिखने वाले संग्रह ही वही थे। इसका एक कारण यह भी था कि अरसे बाद खुली हवा के सम्पर्क में आने और सांस लेने से उनके जिस्म में ताजगी आ गई थी। विश्वसनीय सूत्रों से पता चला कि इन संग्रहों का यह हाल तो तब था कि इन्हे छापने के लिए प्रकाशक ने इनके लेखक से पूरे पैसे एडवांस में लिए थे।

पुस्तक मेले में बुक स्टॉल्स के नजदीक ही चाय ,कॉफी और खानपान की व्यवस्था के लिए भी स्टॉल्स रखी गई थी। जहां की सामग्री की खुशबू पुस्तक मेले में आने वाले लोगों को अपनी ओर हर समय आकर्षित करती रहती थी। इन स्टॉल्स की बिक्री और बुक स्टॉल्स की बिक्री में शायद एक अघोषित मौन प्रतिस्पर्धा चल रही थी। इसमें किसी की भी हार या जीत के अपने ही मायने थे। हर्ष और उल्लास के साथ शुरु हुए पुस्तक मेले में स्थापित और प्रतिष्ठित साहित्यकारों , रचनाकारों के साथ नए लेखक भी मौजूद थे। नए लेखक वहां अपनी पहचान बनाने के लिए नामचीन लेखकों के साथे में हर समय उनके आगे पीछे घूमते रहते थे। बहुत से लेखकों के अलग - अलग संग्रहों के नामचीन लेखकों द्वारा किए गए विमोचन, समीक्षा ,फोटो और सेल्फी लेने की होड़ लगी थी।

इस पुस्तक मेले में आयोजक और प्रकाशक बड़ी संख्या में लेखकों की भीड़ जुटाने में सफल रहे । लेकिन बड़ी तादाद में पाठकों को वहां तक लाने में असफल ही रहे। ज्यादातर संग्रह और किताबें बिक्री न होने के कारण एक लेखक द्वारा दूसरे लेखक को सप्रेम या सादर भेंट के रुप में दे दी गईं। इस घटनाक्रम में कई लेखकों का एक भी कविता या कहानी संग्रह नहीं बिका। इन लेखकों के संग्रह की कॉपियां बिना किसी का ध्यान गए और अपनी जगह से बिना हिले ज़िंदा रहते हुए नहीं बिक पाने के गम में ही वहां पड़ी रहीं । लेकिन अंतिम दिन प्रकाशक के कहने पर कई रचनाकारों के अरसे से गुमनामी के अंधेरे में पड़े विभिन्न संग्रह बाहर निकलकर उजाले में अनेक नामचीन साहित्यकारों को सादर या सप्रेम भेंट की वेदी चढ़ गए। संग्रह की हर कॉपी भेंट के रूप में देते समय हर रचनाकार में वही संवेदनाएं थीं जो विवाह के समय अपनी बेटी का हाथ दामाद के हाथ में देते समय एक पिता में होती हैं। इन संग्रहों की हर कॉपी से रचनाकार के टपकते हुए अदृश्य आंसुओं को हर व्यक्ति देख और महसूस कर सकता था।

एक लिहाज से यह सही भी हुआ कि बहुत रचनाकारों के विभिन्न संग्रहों की ज्यादातर कॉपियां भेंट में चली गईं। गुजरते वक्त के साथ बिना बिके संग्रह के पुराने होते पन्नों पर प्रकाशित हर शब्द के प्रिंट धुंधले होने पर एक दूसरे से बिछड़कर कहां गुम हो जाते, उनका क्या होता पता ही नहीं चलता। वहां अनेक साहित्यकारों और रचनाकारों के साथ और उन्हे अपने संग्रह की कॉपी भेंट करते हुए की रचनाकार की अपने चेहरे पर नकली मुस्कान लिए हुए इतनी फोटो और सेल्फी हैं कि अगले पुस्तक मेले तक सोशल मीडिया पर प्रति दिन एक फोटो भी पोस्ट करें तो उसके बाद भी बहुत फोटो पोस्ट होने के लिए बच जाएं। पुस्तक मेले के समापन वाले दिन कई रचनाकारों के संग्रहों की बची हुई कुछ कॉपियां प्रकाशक की दुकान पर वापिस जाने के लिए डिब्बे में डाल दी गई थीं। मायूस हुई हर कॉपी को कोई अन्य रचनाकार उनकी ओर भी एक बार देख लेता यही सोच रही थी। अपने संग्रह की एक भी प्रति बिक नहीं पाने के कारण निराशा और भीतर अजीब सी टूटन के बावजूद उसका रचनाकार चेहरे पर नकली मुस्कान लिए वहां खड़ा रहता था। मेले के समापन के कई दिन बाद तक कई रचनाकार अपने भीतर के दर्द के कारण चेहरे पर असली मुस्कान नहीं ला पाए थे। मानो हक़ीकत में कुछ समय के लिए वे मुस्कुराना ही भूल गए थे ।

पुस्तक मेले के समापन पर वहां मौजूद सभी ने महसूस किया कि बुक स्टॉल्स पर हुई बिक्री और चाय, कॉफी , खानपान के सामान की स्टॉल्स पर हुई बिक्री की अघोषित मौन प्रतिस्पर्धा में बुक स्टॉल्स बहुत पीछे रह गई थी। यदि खाने के स्टॉल्स पर दिए जाने वाली निश्चित कीमत की सामग्री की कीमत में किसी किताब की डिस्काउंटेड कीमत जोड़कर उसके साथ (पैकेज डील टाइप) देने का कहकर भी किताब दी जाती तब भी विभिन्न संग्रहों की बहुत प्रतियां बिक जाती। लेकिन ऐसा हो न सका।प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पुस्तक मेले के समापन के समाचारों में नामचीन साहित्यकारों , उनकी रचनाओं और प्रकाशकों की स्टॉल्स के साथ वहां रचनाकारों की उपलब्ध किताबों , संग्रहों के नाम और फोटो आदि का उल्लेख था। इन समाचारों में भी बहुत रचनाकारों के नाम , फोटो और उनके संग्रह के नाम को स्थान नहीं मिल पाना और उसका कारण समझ से परे था। लेकिन खुशी इस बात की थी कि बिना बिके ही सही , कई रचनाकारों के संग्रहों को , नामचीन साहित्यकारों को उनके संग्रह भेंट स्वरूप दिए जाने के कारण , उनकी लाइब्रेरी में रखी किताबों , संग्रहों के साथ स्थान मिल जाएगा। **- सुधीर केवलिया, सावित्री - गणेश, 4 - E - 60, जय नारायण व्यास नगर, बीकानेर 334003**

कटिंग ने पेश किया अपना ओरिजिनल कंटेंट स्लेट

बालाजी टेलीफिल्म्स ने अपने नए डिजिटल एंटरटेनमेंट प्लेटफॉर्म कटिंग के लॉन्च की घोषणा की है। यह प्लेटफॉर्म खास तौर पर भारत के मोबाइल-फर्स्ट दर्शकों के लिए तैयार किया गया है, जहां हर दिन मिलेगा ताज़ा, दमदार, मनोरंजक कंटेंट जो दिल से जुड़ा हो और परिवार के साथ देखा जा सके। लॉन्च इवेंट में बालाजी टेलीफिल्म्स के ग्रुप ह्रह्र नितिन बर्मन, हेड ऑफ कंटेंट मेघना जोशी और कटिंग के सभी ओरिजिनल शोज़ की स्टार कास्ट इकबाल खान, शरद मल्होत्रा, एबिगेल पांडे, शहज़ाद शेख़, चाहत पांडे, ऐश्वर्या सखूजा सहित कई कलाकार मौजूद रहे। इस मौके पर प्लेटफॉर्म के लॉन्च और उसके विज़न जो है आसान, दिलचस्प और फैमिली-फ्रेंडली कंटेंट के जश्न को मनाया गया। कटिंग की शुरुआत दमदार ओरिजिनल प्रोग्रामिंग के साथ हुई है, जिसमें कटिंग ओरिजिनल शो 'मिसिंग प्रिया' के साथ-साथ अलग-अलग जॉनर के कई नए फिक्शन और नॉन-फिक्शन शोज़ शामिल हैं। फैमिली एंटरटेनमेंट के वन-स्टॉप डेस्टिनेशन के रूप में कटिंग हर हफ्ते एक सोच-समझकर तैयार किया गया कंटेंट लाइन-अप पेश करता है, ताकि दर्शकों को हर दिन उनके मूड के हिसाब से कुछ नया देखने को मिले। लॉन्च-फॉर्म फिक्शन शोज़, बिंज-वर्थी ओरिजिनल्स, वर्टिकल शॉर्ट-फॉर्म सीरीज़ और मज़ेदार नॉन-फिक्शन कंटेंट के जरिए कटिंग रोज़ाना एंटरटेनमेंट का डोज़ देता है। यह प्लेटफॉर्म खासतौर पर वर्टिकल वीडियो फॉर्मेट को अपनाता है, जिससे मोबाइल पर देखने का अनुभव और भी आसान और मज़ेदार बनता है। कटिंग का ऑफिशियल लॉन्च 19 जनवरी 2026 को हुआ है। इस प्लेटफार्म की साप्ताहिक प्रोग्रामिंग इस प्रकार हैःसास बहू और स्वाद (फैमिली ड्रामा) - सोमवार से गुरुवारमिसिंग प्रिया (कटिंग ओरिजिनल बिंज शो) - हर शुक्रवारजानलेवा इश्क़ (वर्टिकल सीरीज़) - हर शनिवाररोमियो के दिल में जूलिएट (वर्टिकल सीरीज़) - हर शनिवारहोनेस्टली व्हाय नॉट? (नॉन-फिक्शन) - हर रविवारइसके अलावा, कटिंग ने आने वाले समय के लिए भी कई नए ओरिजिनल शोज़ की घोषणा की है, जिनमें शामिल हैंः मुझे तू चाहिए (इकबाल खान, मानसी स्कॉट), एसीपी विक्रांत (शरद मल्होत्रा, विनय आनंद), ज़ाफ़ना हिल्स (ऐश्वर्या सखूजा, सिद्धार्थ भारद्वाज), घर तेरा मेरा (करिश्मा सावंत, शहज़ाद शेख़) साथ ही कई वर्टिकल शोज़ जैसे मौक़ा, झूठे सवेरे सच्ची रातें, खामोश शिकारी, सीक्रेट पति एंड पॉवर गेम, सीक्रेट हेयर, प्यार एक धोखा, डेली फैमिली ड्रामा प्यारे की राहें, प्यार से बंधे रिश्ते और बिंज-वर्थी शोज़ इश्क़ तंदूरी, प्यार की राहें 2, पडोसी पैट्नॉल भी जल्द ही दर्शकों के लिए आने वाले हैं। बालाजी टेलीफिल्म्स के ग्रुप ह्रह्र × ह्रह्र, संजय द्विवेदी ने कहा, ÷कटिंग हमारे डिजिटल सफर में एक स्पष्ट और सशक्त कदम है, जो एक सरल सोच पर आधारित है–आज के दर्शक ऐसा कंटेंट चाहते हैं जो जाना-पहचाना, आसान हो और लगातार उपलब्ध रहे। इस ओरिजिनल कंटेंट स्लेट के ज़रिए हम अनुशासित कंटेंट रणनीति, नए फॉर्मेट्स और प्लेटफॉर्म की स्थायी ग्रोथ के साथ हर दिन के मनोरंजन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य कटिंग को एक भरोसेमंद और परिवार के साथ देखे जाने योग्य एंटरटेनमेंट डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करना है।÷

डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतरराष्ट्रीय गौरव सम्मान से सम्मानित

लेखन, साहित्य और समाजसेवा में विशिष्ट योगदान को मिली वैश्विक पहचान

नई दिल्ली। हिंदी साहित्य,लेखन और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सुप्रसिद्ध लेखिका, साहित्यकार, समाजसेविका, मोटिवेशनल काउंसलर एवं गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' को ÷भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतरराष्ट्रीय गौरव सम्मान卐2026÷ से अलंकृत किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान राजधानी के राजेंद्र भवन ऑडिटोरियम में आयोजित ÷हिंदी चेतना शिखर卐2026 अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह÷ के दौरान प्रदान किया गया। समारोह का आयोजन देवनागरी उत्थान फाउंडेशन, धरा धाम इंटरनेशनल,पं. तिलक राज शर्मा स्मृति ट्रस्ट (अमेरिका) तथा एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड (श्रीलंका) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। सम्मान प्रदान करने वालों में अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक दूत रसायनाचार्य डॉ. आई. मेड धर्मायसा, संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध आधिकारिक प्रतिनिधि जनरल प्रो. जसवीर सिंह (हतह/द्धभ्रद्धदुतह, ऋ), अंतरराष्ट्रीय हिंदीङ्कदेवनागरी प्रवर्तक डॉ. इंदरजीत शर्मा, माल्टा से पधारे अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार एवं योगङ्कध्यान प्रशिक्षक डॉ. चोगशुआ नोगा झांग, संस्कृत साहित्य विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. (डॉ.) देवेश कुमार मिश्र, धरा धाम इंटरनेशनल के मानद कुलपति जगत धर्म चक्रवर्ती, सौहर्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पाण्डेय तथा अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार एवं विचारक डॉ. शंभु पंवार शामिल रहे। उल्लेखनीय है कि डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' की लेखनी को सृजनशीलता, मानवीय संवेदना और समाजोपयोगी दृष्टि का सशक्त प्रतीक माना जाता है। उनके रचनात्मक कार्यों ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में चेतना, संवेदनशीलता और सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा भी दी है। इसी विशिष्ट योगदान को सम्मानित करते हुए उन्हें अंतरराष्ट्रीय सम्मान पत्र प्रदान किया गया। यह सम्मान हिंदी साहित्य जगत के लिए गौरव का विषय होने के साथ-साथ देश की समृद्ध साहित्यिक परंपरा के उज्ज्वल भविष्य का भी संकेतक है।कार्यक्रम का कुशल, ओजस्वी और प्रभावशाली संचालन शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल ने किया।

आज का सुविचार - मेहनत और लग्न से सपने होंगे सच

वर्षा से अधिक प्रभाव स्मृतियों में होता है, क्योंकि लोग बंद कमरों में भी अधिकतर, स्मृत कर पसीने से भीग जाते हैं। प्रसन्न रहने का एक मार्ग यह भी है कि हमें वहाँ जाने से बचना है जहाँ हमारी पीड़ा बसती है। हमारे जीवन में कौन आता है यह महत्वपूर्ण नहीं है, बस अंत तक कौन साथ रहता है यह महत्वपूर्ण है। अंत: अपनी पहचान बड़े